16 somvar vrat katha pdf free

पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार भगवान शिव पृथ्वी लोक का भ्रमण करने की इच्छा से माता पार्वती के साथ अमरावती नामक एक अत्यंत सुंदर नगरी में पहुंचे। वह नगरी हर प्रकार के सुख-वैभव से परिपूर्ण थी, और वहां के राजा ने एक भव्य शिव मंदिर बनवाया हुआ था। भगवान शिव और माता पार्वती कुछ समय के लिए उसी मंदिर में निवास करने लगे।

एक दिन माता पार्वती ने प्रसन्न मुद्रा में बैठे भगवान शिव से पूछा — "हे नाथ, संसार में ऐसा कौन सा व्रत है जो सरलता से किया जा सके और भक्तों को शीघ्र फल भी प्रदान करे?" भगवान शिव ने उत्तर दिया — "देवी, सभी व्रतों में सोलह सोमवार का व्रत सबसे श्रेष्ठ और शीघ्र फलदायी है। जो भी श्रद्धा से इसे करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं।"

संयोगवश, उसी मंदिर का पुजारी यह सारी बातचीत छिपकर सुन रहा था। यह सुनकर उसने भी मन में संकल्प ले लिया कि वह भी यह व्रत करेगा। परंतु दुर्भाग्य से, व्रत आरंभ करने से पहले ही उसे कुष्ठ रोग (कोढ़) हो गया। नगरवासी उससे दूरी बनाने लगे, और यह बात राजा तक भी पहुंच गई। राजा ने यह सोचकर कि यह किसी पाप के कारण हुआ है, पुजारी को मंदिर से हटाकर किसी दूसरे व्यक्ति को पुजारी नियुक्त कर दिया।

अपमानित और असहाय पुजारी मंदिर के बाहर बैठकर भिक्षा मांगकर जीवन यापन करने लगा। कुछ समय पश्चात, उसी मंदिर में कुछ अप्सराएं पूजा करने आईं। उन्होंने कोढ़ग्रस्त

पुजारी की दयनीय स्थिति देखी और उसका कारण पूछा। पुजारी ने बिना संकोच अपनी पूरी व्यथा सुना दी।

अप्सराओं को उस पर दया आई, और उन्होंने उसे बताया कि उन्होंने स्वयं सोलह सोमवार का व्रत रखकर अपने कष्ट दूर किए हैं। उन्होंने पुजारी को समझाया कि यदि वह भी श्रद्धापूर्वक यह व्रत करे, तो भगवान शिव उसके सभी रोग और कष्ट दूर कर देंगे। पुजारी ने उत्सुकतापूर्वक व्रत की पूरी विधि पूछी, और अप्सराओं ने उसे संकल्प, पूजा और कथा-श्रवण की संपूर्ण प्रक्रिया विस्तार से समझाई।

पुजारी ने पूर्ण निष्ठा से सोलह सोमवार तक यह व्रत किया। व्रत पूर्ण होते ही भगवान शिव की कृपा से उसका कुष्ठ रोग पूरी तरह समाप्त हो गया और उसका शरीर पहले से भी अधिक सुंदर और स्वस्थ हो गया। यह चमत्कार देखकर राजा और नगरवासी आश्चर्यचकित रह गए, और राजा ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए पुजारी को पुनः सम्मानपूर्वक मंदिर में वापिस पुजारी नियुक्त किया।

इसी कथा के प्रचलन से यह मान्यता बनी कि सोलह सोमवार व्रत असाध्य रोगों, संकटों और बाधाओं को दूर करने में अत्यंत प्रभावशाली है, और आज भी अनेक भक्त संतान प्राप्ति, विवाह में आ रही अड़चन, स्वास्थ्य लाभ और मनचाहे जीवनसाथी की कामना से यह व्रत श्रद्धापूर्वक करते हैं।

https://hindisanatan.com/category/vrat-katha/